ऐसो को उदार जग माहीं

Aiso Ko Udar Jag Mahin • भजन • देवनागरी

ऐसो को उदार जग माहीं।
बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोउ नाहीं॥

जो गति जोग बिराग जतन करि नहिं पावत मुनि ग्यानी।
सो गति देत गीध सबरी कहँ प्रभु न बहुत जिय जानी॥

जो संपति दस सीस अरप करि रावन सिव पहँ लीन्हीं।
सो संपदा बिभीषन कहँ अति सकुच-सहित हरि दीन्हीं॥

तुलसिदास सब भाँति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो।
तौ भजु राम, काम सब पूरन करैं कृपिनिधि तेरो॥

रचना / पाठ-परंपरा: गोस्वामी तुलसीदास, विनय-पत्रिका। प्रचलित मूल पद; संदर्भ के स्पष्ट टंकण-दोष गति, अरप और सो के रूप में सुधारे गए हैं। पारंपरिक पाठ; वर्तनी और पाठांतर संभव हैं।